मीमांसा दर्शन

प्रो राजीव कुमार
लंगट सिंह कॉलेज,मुज़फ़्फ़रपुर

मीमांसा दर्शन से के प्रतिपादय विषय-

- मीमांसा दर्शन की सामान्य विशेषताएं
- मीमांसा साहित्य
- धर्म की अवधारणा
- वेद अपौरुषेय हैं- एक विवेचन
- अपूर्व की अवधारणा

मीमांसा दर्शन:एक परिचय

‘ मीमांसा ‘ शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है – मी(उपसर्ग)+ मान् (धातु) +सन् (प्रत्यय) +टाप् (स्त्री प्रत्यय)।इसका अर्थ है –आलोचनात्मक विवेचन।

- मीमांसा दर्शन को ‘ पूर्व मीमांसा ‘ भी कहा जाता है । इसका कारण है कि इसमें कुल बीस अध्याय है जिसमें पहले बारह अध्याय का संबंध मीमांसा दर्शन से हैं ।
- मध्य के चार अध्याय संकर्ष कांड एवं अंतिम के चार अध्याय उत्तरमीमांसा या वेदांत दर्शन कहलाते हैं।

- मीमांसा दर्शन को कर्म मीमांसा, धर्मा मीमांसा मूल्य मीमांसा और यज्ञ मीमांसा भी कहा जाता है –
- कर्म मीमांसा – यह दर्शन कर्म सिद्धांत का सबसे प्रबल समर्थक है,इसके अनुसार कर्म करके मनुष्य सर्वोच्च पुरुषार्थ की प्राप्ति कर सकता है।

- धर्म मीमांसा – इस दर्शन का मुख्य आधार जैमिनी द्वारा रचित धर्म- सूत्र है। इसमें धर्म ,यानि वेद प्रतिपादित नैतिक कर्तव्य विवेचन किया गया है।

- मूल्य मीमांसा – यह सार्वभौम नैतिक सिद्धांत का प्रतिपादन (Philosophy of Ethical Action) करता है।नैतिक कर्मों का विधिवत आचरण लौकिक एवं लोकोत्तर जीवन का आधार है।

- यज्ञ मीमांसा –यज्ञ एवं उसकी विधियों के विषद विवेचन के करें इसे यज्ञ मीमांसा भी कहा जाता है।

- मीमांसा आस्तिक दर्शन है क्योंकि यह वेद की प्रामाणिकता का सबसे प्रबल समर्थक है।

- मीमांसा अनीश्वर वादी दर्शन है क्योंकि यह ईश्वर की सत्ता का समर्थन नहीं करता। God is neither the creater,nor regulator of the world nor is the moral supervisor of human conduct.

- मीमांसा धर्म को सबसे महत्वपूर्ण स्थान देता है (sovergenity of ethical law) ।

- मीमांसा यथार्थवादी दर्शन है , यह जीव और जगत कि यथार्थ सत्ता का समर्थक है।जगत की न तो एक खास समय में सृष्टि होती है और न ही संपूर्ण रूप से लय ही होता है। जगत अनादि और अनंत है।

मीमांसा साहित्य

- जैमिनी –मीमांसा सूत्र

- सबर स्वामी – मीमांसा सूत्र भाष्य (साबर भाष्य)

- तीनसम्प्रदाय -1.भाट्ट सम्प्रदाय (कुमारिल भट्ट द्वारा आरम्भ)
- 2. प्राभाकर सम्प्रदाय (प्रभाकर) गुरु मत
- 3. मुरारी मिश्र

- कुमारिल भट्ट विरचित तीन पुस्तकें – श्लोक वार्तिक, तंत्र वार्तिक, रचित वृहत टीका एवं लघु टीका

धर्म विचार

- मीमांसा के अनुसार धर्म , लोक एवं लोकोत्तर जीवन का नियामक सिद्धांत है।

- धर्म सम्मत कर्म का आचरण ही अभीष्ट फल दायी है अर्थात् दुःख विनाश और सनातन सुख ,जिसे स्वर्ग कहा गया है, की प्राप्ति का राजमार्ग है।

- मीमांसा दर्शन का प्रथम सूत्र 'अथातो धर्म जिज्ञासा ' का उत्तर है- चोदना लक्षणोअर्थो धर्मः यहां चोदना का अर्थ है –वेद विहित कर्म ।

- यागादि रेव धर्मः।अर्थात् यज्ञ ही धर्म है।

- मीमांसा का मुख्य उद्देश्य धर्म की रक्षा के लिए धर्म के प्रमाण,धर्म के स्वरूप,धर्म के साधन और धर्म के फल की सम्यक व्याख्या कर व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को सुव्यवस्थित रखना है।

- धर्म के ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन वेद है ।

स्वरूप के बोधक वाक्य को लक्षण कहते हैं। कुमरिल ने धर्म के तीन लक्षण बताए हैं –

1. वेद प्रतिपादित हो
2.प्रयोजन युक्त हो
3 सार्थक हो

- संक्षेप में :” वेद प्रतिपादित इष्ट साधनता ज्ञान “ को ही धर्म कहा गया है।

(वेदेन् प्रयोजनं उद्दिश्य विधियमानो अर्थो धर्मः)

इस प्रकार मीमांसा का धर्म ,कोई विश्वास एवं पूजा पद्धति नहीं बल्कि जीवन के नियमन का सिद्धांत है।

धन्यवाद